साप्ताहिक
बुलंद गोंदिया
खबरों का आईना

प्रधान संपादक : **अभिषेक चौहान** । संपादक : **नवीन अग्रवाल**

E-mail : **bulandgondia@gmail.com** | E-paper : **bulandgondia.net** | Office Contact No.: **7670079009** | R. No.: **MAH-HIN-10169**

वर्ष : 2 | अंक : 32 | गोंदिया : गुरुवार, 17 से 23 मार्च 2022 | पृष्ठ : 4 | मूल्य : रु. 5

सीमेंट रास्ते का निर्माण हुआ ही नहीं और १० लाख का निकला बिल

जिला परिषद बांधकाम विभाग का कारनामा : ठेकेदार ने लाखों की रॉयल्टी का शासन को लगाया चूना

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिला परिषद में गत पौने 2 वर्षो से प्रशासक राज चल रहा है। जिसके चलते संबंधित विभागों के अधिकारियों पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण नहीं होने से बांधकाम विभाग में मनमानी तरीके से कामकाज चल रहा है। अनेक गड़बड़ी के मामले सामने आए हैं। जिसमें मुख्य रुप से सूचना के अधिकार के अंतर्गत खुलासा हुआ कि केरझरा तीर्थ क्षेत्र में सीमेंट मार्ग का निर्माण हुआ ही नहीं लेकिन 10 लाख रुपए की निधि का बिल मंजूर हो चुका है। वहीं दूसरी ओर 2 करोड़ 10 लाख रुपए की निधि के टेंडर जो 32 प्रतिशत बिलों (कम दर) से हुआ था, किंतु बिल पूरा 2 करोड़ 10 लाख रुपए का निकाला गया है। जिससे जिप बांधकाम विभाग की कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिन्ह निर्माण हो रहा है।

गौरतलब है कि गोंदिया जिला परिषद में गत पौने 2 वर्षो से प्रशासक राज चल रहा है, तथा वर्तमान में चुनाव संपन्न होने के बावजूद अब तक पदाधिकारियों की समितियों का गठन नहीं हो पाया है। जिसके चलते पौने 2 वर्षो के दौरान जिला परिषद के सभी विभागों में अनेक खामियां व गड़बड़ी बड़े पैमाने पर हुई है। इसी के अंतर्गत जिला परिषद बांधकाम विभाग के 3 प्रकरण सामने आए हैं। जिसमें मार्ग का निर्माण हुआ नहीं पर बिल निकला, बिलों में गए टेंडर का पूरा भुगतान व मंत्री के आदेश से जांच की रिपोर्ट पेश नहीं की गई है।

पहला प्रकरण इस प्रकार है कि जिला परिषद बांधकाम विभाग के अंतर्गत क वर्ग तीर्थ क्षेत्र योजना के तहत केरझरा तीर्थ क्षेत्र में मंदिर से नाले तक सीमेंट मार्ग का निर्माण कार्य दिखाकर 10 लाख रुपए के बिल का भुगतान किया जा चुका है। जबकि उपरोक्त स्थान पर अब तक सीमेंट मार्ग का निर्माण ही नहीं हुआ है। यह गंभीर मामला सुचना के अधिकार के अंतर्गत सामने आया है। जिसमें उपरोक्त क्षेत्र वन विभाग के अधीन आने के बावजूद वन विभाग से किसी भी प्रकार का ना हरकत प्रमाणपत्र नहीं लिया गया है।

दूसरा मामला यह है कि गोंदिया तहसील के अंतर्गत आने वाले गोंडीटोला से कटगटोला तक मार्ग निर्माण के लिए 2 करोड़ की राशि मंजूर की गई थी। जिसकी टेंडर प्रक्रिया के दौरान 32 प्रतिशत बिलो (कम दर) में निविदा तिरोड़ा निवासी ठेकेदार उमेश आर असाटी द्वारा लिया गया था। जिसमें उपरोक्त नियम के अनुसार एक करोड़ 34 लाख रुपए के बांधकाम का कार्यारंभ आदेश दिया गया था। किंतु निविदा कम दर की होने के बावजूद बांधकाम विभाग द्वारा 2 करोड़ 10 लाख रुपए की निधि के धनादेश मंजूर किए गए हैं। जिसमें करीब 80 लाख रुपए की हेराफेरी का मामला मामले का खुलासा हुआ है। साथ ही उपरोक्त मामले में निर्माण कार्य के लिए अधीक्षक

अभियंता की भी मंजूरी नहीं ली गई तथा निर्माण कार्य में 1206 ब्रास रेती, गिट्टी, मुरुम उपयोग में लाई गई। जिसमें करीब 10 लाख की रॉयल्टी शासन को जमा होना था। जिसका भुकतान बांधकाम विभाग द्वारा ठेकेदार को की गई थी। लेकिन शासन की रॉयल्टी का पैसा जमा नहीं किया गया जिससे शासन को 10 लाख की रायल्टी का चुना लगाया गया।

तीसरा प्रकरण इस प्रकार है कि गोंदिया तहसील के अंतर्गत आने वाले दतोरा से मोरवाही के मार्ग का निर्माण कार्य 30 लाख रुपए की निधि से किया गया था। जिसमें घटिया दर्जे का निर्माण कार्य होने की शिकायत सार्वजनिक बांधकाम मंत्री अशोक चौहान से की गई थी। जिस पर मंत्री द्वारा उपरोक्त मामले की जांच के आदेश दिए गए थे तथा जांच कर तत्काल उसका अव्हाल शासन को देने के निर्देश दिए गए थे। किंतु अब तक उपरोक्त मामले की जांच का अव्हाल पेश नहीं किया गया। इस कार्रवाई को करीब 6 महीना बीत चुका है।

<u>वन विभाग की मंजूरी नहीं</u>

केरझरा में क वर्ग तीर्थ क्षेत्र योजना के अंतर्गत केरझरा देवस्थान से नाले तक सीमेंट मार्ग के निर्माण कार्य के लिए जिला परिषद बांधकाम विभाग द्वारा 20 नवंबर 2019 को कार्यारंभ आदेश दिए जाने का उल्लेख है। जिस स्थान पर मार्ग का निर्माण किया जाना था वह क्षेत्र संरक्षित वन क्षेत्र में आने के चलते वन विभाग की मंजूरी लेना आवश्यक है। किंतु उसकी मंजूरी नहीं लिए जाने की जानकारी भी सामने आई है । इस संदर्भ में वन विभाग द्वारा 2 मार्च 2022 को सूचना के अधिकार के अंतर्गत मांगी गई जानकारी के अनुसार दिए गए पत्र में स्पष्ट किया गया है कि केरझरा देवस्थान से नाले तक सीमेंट मार्ग का निर्माण नहीं किया गया है। निर्माण के पूर्व वन विभाग से मंजूरी भी नहीं ली गई है। उपरोक्त मार्ग का निर्माण नहीं हुआ है तो जिला परिषद बांधकाम विभाग द्वारा मार्ग का पूर्ण निर्माण दिखाकर 10 लाख का बिल किस आधार पर निकाला गया, इस पर प्रश्नचिन्ह निर्माण हो रहा है।

उल्लेखनीय है कि बिल निकालते समय एक सीमेंट मार्ग का फोटो जोड़ा गया है, जिसमें फोटो में दिखाई गई जीपीएस भी गलत बताया गया है। मार्ग का निर्माण न कर शासन की आंखों में धूल झोंकते हुए 10 लाख रुपए का बिल निकाला गया है।

<u>एक ही अधिकारी के हस्ताक्षर सब जगह</u>

उल्लेखनीय है कि किसी भी प्रकार के कार्यो का बिल निकालते समय उस पर कनिष्ठ अभियंता, उप विभागीय अभियंता व कार्यकारी अभियंता के हस्ताक्षर होना अनिवार्य है। किंतु उपरोक्त प्रकरण में बिल के धनादेश निकालते समय सिर्फ एक ही अधिकारी प्रभारी कार्यकारी अभियंता जिला परिषद के हस्ताक्षर का मामला सामने आ रहा है।

<u>रसीद को किया प्रमाणित रॉयल्टी माफ नहीं</u>

गोंडीटोला कटगटोला मार्ग निर्माण कार्य के लिए लगने वाले गौण खनिज की रॉयल्टी को प्रमाणित करने का पत्र जिला परिषद बांधकाम विभाग के पत्र पर दिया गया है। जिसका यह अर्थ नहीं है कि रॉयल्टी माफ की गई है। रॉयल्टी माफ नहीं होती।

- सचिन वाडवे, जिला खनिकर्म अधिकारी गोंदिया

<u>बांधकाम नियमानुसार</u>

जिला परिषद बांधकाम विभाग के अंतर्गत जो कार्य किए गए हैं वह नियमानुसार होने के साथ ही गोंडीटोला-कटगटोला मार्ग की लंबाई बढ़ने से मंजूरी के लिए अधीक्षक अभियंता की आवश्यकता नहीं तथा केरझरा में बांधकाम हो चुका है।

- ललित मुंदडा, प्रभारी कार्य.अभियंता जिप गोंदिया

यात्री विमान सेवा के प्रथम यात्री गोपाल अग्रवाल का भव्य स्वागत

बुलंद गोंदिया - गोंदिया शहर के लिए 13 मार्च 2022 एक ऐतिहासिक दिन रहा, जहां पहली यात्री विमान सेवा शुरु हुई। जिसके प्रथम यात्री के रुप में युवा जागृति के अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल सम्मानित हुए। जिनका सम्मान इंदौर व गोंदिया एयरपोर्ट पर भव्य रुप से किया गया।

गौरतलब है कि गोंदिया के बिरसी एयरपोर्ट पर 13 मार्च 2022 को पहली यात्री विमान सेवा शुरु हुई, जो जिले के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित हो चुकी है। इस विमान सेवा के प्रथम यात्री के रुप में शहर की सामाजिक संघटना युवा जागृति के अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल प्रथम यात्री के रुप में सम्मानित हुए। जिन का भव्य स्वागत इंदौर व गोंदिया के एयरपोर्ट पर गोपाल अग्रवाल व उनके मित्र परिवार द्वारा अभिनंदन किया गया। जिसमें विष्णु शर्मा, नवीन अग्रवाल व अन्य उपस्थित थे। इस अवसर पर उन्होंने अपने शब्द व्यक्त करते हुए कहा कि उपरोक्त विमानतल ब्रिटीशकालीन था, जो जर्जर अवस्था में पहुंच चुका था। जिसे सांसद प्रफुल पटेल द्वारा आधुनिकीकरण कर फिर से निर्माण करवाया गया। जिसके फलस्वरुप आज गोंदिया से यात्री विमान सेवा शुरु हो चुकी है। जिसके लिए वर्तमान जनप्रतिनिधियों द्वारा भी अथक प्रयास किया गया जिनका वे धन्यवाद देते हैं।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त यात्री विमान सेवा की प्रथम उड़ान के लिए नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया द्वारा इंदौर से वर्चुअल झांडी दिखाकर की गई। इस अवसर पर उनके साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान भी उपस्थित थे। फ्लाईबिग का यात्री विमान जब गोंदिया के रनवे पर उतरा तो गोंदिया एयरपोर्ट पर गोंदिया जिले के हजारों लोग उसका स्वागत करने के लिए उपस्थित थे। रनवे पर प्लेन के आते ही सर्वप्रथम पानी की बौछार कर यात्री विमान का स्वागत किया गया। विमान से उतरने वाले सभी यात्रियों को भी यात्रा की शुभकामनाएं व पुष्पगुच्छ देकर अभिनंदन किया गया।

बोदलकसा पंछी महोत्सव बना दिखावा

पर्यटन संचालनालय की राशि का बंदरबांट । जिले में नागरिकों तक नहीं पहुंची महोत्सव की जानकारी

बुलंद गोंदिया - महाराष्ट्र राज्य के पर्यटन स्थलों का प्रचार प्रसार करने के लिए पर्यटन संचालनालय व जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वाधान में 12 व 13 मार्च को गोंदिया जिले के तिरोड़ा तहसील के अंतर्गत आनेवाले बोदलकसा पर्यटन स्थल में पंछी महोत्सव का आयोजन किया गया था। किन्तु उपरोक्त पंछी महोत्सव जिलेवासियों के लिए मात्र दिखावा साबित हुआ। आनन-फानन में आयोजित किए गए उपरोक्त महोत्सव की जानकारी जिले के सामान्य नागरिकों तक पहुंचाने में पर्यटन संचालनालय असफल रहा। कार्यक्रम में लगने वाली करीब 35 लाख रुपए की निधि का सिर्फ बंदरबांट हुआ है।

गौरतलब है कि राज्य महाराष्ट्र राज्य के पर्यटन स्थलों का प्रचार प्रसार पर्यटन संचालनालय के माध्यम से किया जाता है। जिसके लिए जिले के बोदलकसा पर्यटन स्थल में पंछी महोत्सव का आयोजन किया गया था। उपरोक्त आयोजन के लिए कार्यक्रम के 1 दिन पूर्व ही संचालनालय द्वारा मीडिया को जानकारी दी। इस अवसर पर जानकारी दी गई कि कार्यक्रम के लिए करीब 35 लाख की निधि पर्यटन संचालनालय द्वारा मंजूर की गई है। जिसे इतनी बड़ी राशि मंजूर होने के बावजूद कोरोना काल के 2 वर्षों के पश्चात आयोजित होनेवाले इस कार्यक्रम का प्रचार प्रसार करने मे पर्यटन संचालनालय असफल रहा। जिले के सभी नागरिकों तक इसकी जानकारी नहीं पहुंच पाई। जिससे उपरोक्त कार्यक्रम पर प्रश्नचिन्ह निर्माण होने लगा है। कार्यक्रम में आनन-फानन में कुछ महिला बचतगट के स्टाल व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जो सिर्फ दिखावे के लिए नाम मात्र ही रहा। हालांकि उपरोक्त कार्यक्रम में विश्व प्रसिद्ध वन्य जीव फिल्म

निर्माता नल्लामुथु आकर्षण का केंद्र थे।

उपरोक्त कार्यक्रम का उद्घाटन बोदलकसा में तिरोडा क्षेत्र के विधायक विजय रहांगडाले के हस्ते व जिलाधिकारी नयना गुंडे की प्रमुख उपस्थिति तथा अपर जिलाधिकारी राजेश खवले, पर्यटन विकास महामंडल की वरिष्ठ प्रादेशिक व्यवस्थापक शिप्रा बोरा, उपसंचालक प्रशांत सवाई, निवासी उप जिलाधिकारी जयराम देशपांडे, तिरोड़ा की उप विभागीय अधिकारी पूजा गायकवाड, पुलिस उपविभागीय अधिकारी प्रमोद मडामे, जिला अधीक्षक भूमि अभिलेख रोहिणी सागरे, गोंदिया के तहसीलदार धनंजय देशमुख अनिल खड़तकर, आपदा व्यवस्थापन अधिकारी राजेंद्र चौबे, पक्षी मित्र डॉ. राजेंद्र जैन, बोदलकसा के सरपंच पटले, जीप सदस्य बालू बवंनथड़े पंचायत समिति सदस्य जमाईवार की उपस्थिति में किया गया था।

<u>क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों को मंच पर स्थान नहीं</u>

बोदलकसा में आयोजित पर्यटन महोत्सव में बोदलकसा के सरपंच पटले सहित जिला परिषद सदस्य व पंचायत समिति सदस्यों को विभाग द्वारा मंच पर स्थान उपलब्ध नहीं कराया गया। जिस पर विधायक विजय रहांगडाले द्वारा नाराजगी भी व्यक्त की गई थी।

<u>प्रचार प्रसार के लिए एजेंसी नागपुर की</u>

गोंदिया जिले के बोदलकसा में पर्यटन संचालनालय द्वारा पंछी महोत्सव आयोजित किया गया था। जिसके प्रचार-प्रसार का जिम्मा नागपुर की एक निजी मीडिया एजेंसी को दिया गया था। जबकि जिले में होने वाले प्रचार-प्रसार का कार्य जिले की मीडिया के माध्यम से किया जाना चाहिए। किंतु जिले की मीडिया की उपेक्षा कर पर्यटन संचालनालय द्वारा नागपुर की एक निजी कंपनी को ठेका दिया गया, जिस पर भी प्रश्नचिन्ह निर्माण हो रहा है।

<u>आनन-फानन में तैयारी</u>

महाराष्ट्र पर्यटन विभाग द्वारा कोविड-19 के पश्चात पर्यटन महोत्सव की तैयारी आनन-फानन में की गई थी। जिसके लिए जिले में तैयारी के लिए मात्र 5 दिनों का ही समय मिल पाया। जिसके चलते कुछ खामियां रह गई। किंतु भविष्य में होने वाले किसी भी आयोजन में इन खामियों को नहीं रहने दिया जाएगा तथा सभी तैयारियां पूर्ण रूप से की जाएंगी।

- प्रशांत सवाई, पर्यटन उपसंचालक, नागपुर

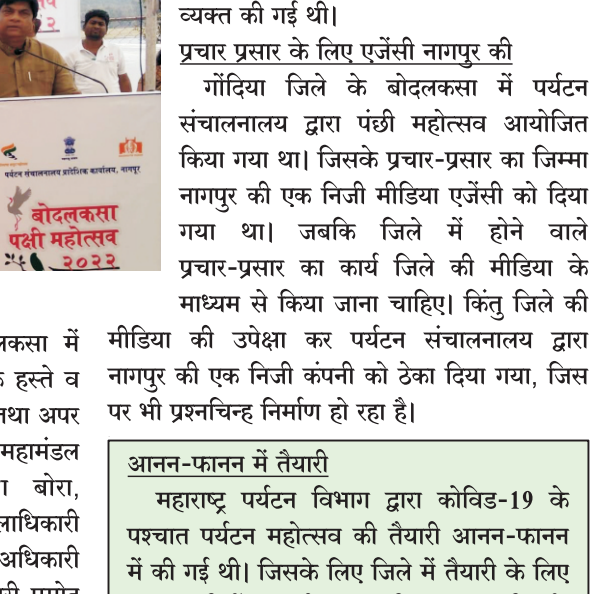

<u>बचत गट के स्टाल सिर्फ शोपीस</u>

बोदलकसा पंछी महोत्सव में महिला बचत गटों के स्टाल लगाए गए थे। लेकिन प्रचार प्रसार के अभाव में नागरिकों व पर्यटको की संख्या अधिक प्रमाण में नहीं होने के चलते सभी स्टाल सिर्फ शोपीस ही बने हुए थे। जिसमें ग्राहकों का अभाव साफ दिखाई दे रहा था।

गोंदिया में छात्रों के घटिया पोषण आहार का मामला पहुँचा मुंबई

बुलंद गोंदिया खबर का असर

पूर्व पालकमंत्री डॉ. फुके ने विधान परिषद में की ठेकेदार पर शख्त करवाई की मांग

बुलंद गोंदिया - छात्रों को मिड-डे-मिल के नाम पर वितरित किया जा रहा पोषण आहार पशुओं के चारे से भी बदतर होने एवं ऐसे पोषण आहार से शालेय विद्यार्थियों के स्वास्थ्य से धोखाधड़ी करने पर ये मामला बुलंद गोंदिया में 15 मार्च को प्रकाशित हुआ था। जिस पर संज्ञान लेते हुए विधायक परिणय फुके ने यह मामला मुंबई में सरकार के समक्ष उठाया।

गोंदिया जिले के पूर्व पालकमंत्री एवं वर्तमान विधान परिषद सदस्य डॉ. परिणय फुके ने आज इस गंभीर मामले पर पॉईंट ऑफ इन्फॉर्मेशन के तहत विधान परिषद सभागृह में सवाल कर सरकार का ध्यान केन्द्रित किया। पूर्व पालकमंत्री व वर्तमान विधायक डॉ. फुके ने कहा, गोंदिया जिले के गोंदिया तहसील अंतर्गत चंगेरा ग्राम में 15 मार्च को जिला परिषद की जिला परिषद शाला में शालेय विद्यार्थियों को पोषण आहार वितरित किया गया था। ये पोषण आहार इतना घटिया था कि इसे पशुओं को खिलाना भी मुनासिब नहीं। ऐसे घटिया दर्जे के आहार का वितरण शालेय विद्यार्थियों को कर उनके स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि, पोषण आहार के रुप में मिले चना और मूंगदाल में कूड़ा, कचरा, भूसा और गुटखा के पाऊच मिले है। इस पोषण आहार की स्थिति पशुओ के चारे से घटिया थी। डॉ. फुके ने सभागृह में दोषी सबंधित ठेकेदार पर शख्त कार्रवाई की विनंती कर आगे से कोई भी ठेका न देने की गुजारिश की एवं इस पोषण आहार मामले पर सम्पूर्ण जांच कराने की मांग की।

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय और नेपाली लोगों का त्यौहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

होली रंगों का तथा हँसी-खुशी का त्योहार है। यह भारत का एक प्रमुख और प्रसिद्ध त्योहार है, जो आज विश्वभर में मनाया जाने लगा है। रंगों का त्यौहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रुप से दो दिन मनाया जाता है। यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्यौहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं वहाँ भी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरे दिन, जिसे प्रमुखत: धुलेंडी व धुरखेल या धूलिवंदन इसके अन्य नाम हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होली का त्यौहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रुढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ़ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। गुझिया होली का प्रमुख पकवान है जो कि मावा (खोया) और मैदा से बनती है और मेवाओं से युक्त होती है इस दिन कांजी के बड़े खाने व खिलाने का भी रिवाज है। नए कपड़े पहन कर होली की शाम को लोग एक दूसरे के घर होली मिलने जाते है जहाँ उनका स्वागत गुझिया, नमकीन व ठंडाई से किया जाता है। होली के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है।

इतिहास

होली भारत का अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली, होलिका या होलाका नाम से मनाया जाता था। वसंत की ऋतु में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के कारण इसे वसंतोत्सव और काम-महोत्सव भी कहा गया है।

इतिहासकारों का मानना है कि आर्यो में भी इस पर्व का प्रचलन था लेकिन अधिकतर यह पूर्वी भारत में ही मनाया जाता था। इस पर्व का वर्णन अनेक पुरातन धार्मिक पुस्तकों में मिलता है। इनमें प्रमुख हैं, जैमिनी के पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गार्हय-सूत्र। नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रंथों में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है। विंध्य क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ईसा से पुराने एक अभिलेख में भी इसका उल्लेख किया गया है। संस्कृत साहित्य में वसन्त ऋतु और वसन्तोत्सव अनेक कवियों के प्रिय विषय रहे हैं।

सुप्रसिद्ध मुस्लिम पर्यटक अलबरुनी ने भी अपने ऐतिहासिक यात्रा संस्मरण में होलिकोत्सव का वर्णन किया है। भारत के अनेक मुस्लिम कवियों ने अपनी रचनाओं में इस बात का उल्लेख किया है कि होलिकोत्सव केवल हिंदू ही नहीं मुसलमान भी मनाते हैं। सबसे प्रामाणिक इतिहास की तस्वीरें हैं मुगल काल की और इस काल में होली के किस्से उत्सुकता जगाने वाले हैं। अकबर का जोधाबाई के साथ तथा जहाँगीर का नूरजहाँ के साथ होली खेलने का वर्णन मिलता है। अलवर संग्रहालय के एक चित्र में जहाँगीर को होली खेलते हुए दिखाया गया है। शाहजहाँ के समय तक होली खेलने का मुग़लिया अंदाज़ ही बदल गया था। इतिहास में वर्णन है कि शाहजहाँ के ज़माने में होली को ईद-ए-गुलाबी या आब-ए-पाशी (रंगों की बौछार) कहा जाता था। अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र के बारे में प्रसिद्ध है कि होली पर उनके मंत्री उन्हें रंग लगाने जाया करते थे। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में दर्शित कृष्ण की लीलाओं में भी होली का विस्तृत वर्णन मिलता है।

इसके अतिरिक्त प्राचीन चित्रों, भित्तिचित्रों और मंदिरों की दीवारों पर इस उत्सव के चित्र मिलते हैं। विजयनगर की राजधानी हंपी के चह्नवी शताब्दी के एक चित्रफलक पर होली का आनंददायक चित्र उकेरा गया है। इस चित्र में राजकुमारों और राजकुमारियों को दासियों सहित रंग और पिचकारी के साथ राज दम्पत्ति को होली के रंग में रंगते हुए दिखाया गया है। 12वी शताब्दी की अहमदनगर की एक चित्र आकृति का विषय वसंत रागिनी ही है। इस चित्र में राजपरिवार के एक दंपत्ति को बगीचे में झूला झूलते हुए दिखाया गया है। साथ में अनेक सेविकाएँ नृत्य-गीत व रंग खेलने में व्यस्त हैं। वे एक दूसरे पर पिचकारियों से रंग डाल रहे हैं। मध्यकालीन भारतीय मंदिरों के भित्तिचित्रों और आकृतियों में होली के सजीव चित्र देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए इसमें 5वी शताब्दी की मेवाड़ की एक कलाकृति में महाराणा को अपने दरबारियों के साथ चित्रित किया गया है। शासक कुछ लोगों को उपहार दे रहे हैं, नृत्यांगना नृत्य कर रही हैं और इस सबके मध्य रंग का एक कुंड रखा हुआ है। बूंदी से प्राप्त एक लघुचित्र में राजा को हाथीदाँत के सिंहासन पर बैठा दिखाया गया है जिसके गालों पर महिलाएँ गुलाल मल रही हैं।

कहानियाँ

होली के पर्व से अनेक कहानियाँ जुड़ी हुई हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध कहानी है प्रहलाद की। माना जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। अपने बल के अहंकार में वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रहलाद ईश्वर भक्त था। प्रहलाद की ईश्वर भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकशिपु ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपु ने आदेश दिया कि होलिका प्रहलाद को गोद में लेकर आग में बैठे। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई, पर प्रहलाद बच गया। ईश्वर भक्त प्रहलाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है। प्रतीक रुप से यह भी माना जाता है कि प्रहलाद का अर्थ आनन्द होता है। वैर और उत्पीड़न की प्रतीक होलिका (जलाने की लकड़ी) जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रहलाद (आनंद) अक्षुण्ण रहता है।

होलिका दहन की मुख्य कथा

होली से सम्बन्धित मुख्य कथा के अनुसार एक नगर में हिरण्यकश्यप नाम का दानव राजा रहता था। वह सभी को अपनी पूजा करने को कहता था, लेकिन उसका पुत्र प्रहलाद भगवान विष्णु का उपासक भक्त था। हिरण्यकश्यप ने भक्त प्रहलाद को बुलाकर राम का नाम न जपने को कहा तो प्रहलाद ने स्पष्ट रुप से कहा, पिताजी परमात्मा ही समर्थ है। प्रत्येक कष्ट से परमात्मा ही बचा सकता है। मानव समर्थ नहीं है। यदि कोई भक्त साधना करके कुछ शक्ति परमात्मा से प्राप्त कर लेता है तो वह सामान्य व्यक्तियों में तो उत्तम हो जाता है, परंतु परमात्मा से उत्तम नहीं हो सकता।

यह बात सुनकर अहंकारी हिरण्यकश्यप क्रोध से लाल पीला हो गया और नौकरों सिपाहियों से बोला कि इसको ले जाओ मेरी आँखों के सामने से और जंगल में सर्पो में डाल आओ। सर्प के डसने से यह मर जाएगा। ऐसा ही किया गया। परंतु प्रहलाद मरा नहीं, क्योंकि सर्पो ने डसा नहीं।

प्रहलाद की कथा के अतिरिक्त यह पर्व राक्षसी ढुंढी, राधा कृष्ण के रास और कामदेव के पुनर्जन्म से भी जुड़ा हुआ है।ख16, कुछ लोगों का मानना है कि होली में रंग लगाकर, नाच-गाकर लोग शिव के गणों का वेश धारण करते हैं तथा शिव की बारात का दृश्य बनाते हैं। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन पूतना नामक राक्षसी का वध किया था। इसी खुशी में गोपियों और ग्वालों ने रासलीला की और रंग खेला था।

परंपराएँ

होली के पर्व की तरह इसकी परंपराएँ भी अत्यंत प्राचीन हैं और इसका स्वरुप और उद्देश्य समय के साथ बदलता रहा है। प्राचीन काल में यह विवाहित महिलाओं द्वारा परिवार की सुख समृद्धि के लिए मनाया जाता था और पूर्ण चंद्र की पूजा करने की परंपरा थी। वैदिक काल में इस पर्व को नवात्रैष्टि यज्ञ कहा जाता था। उस समय खेत के अधपके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था। अन्न को होला कहते हैं, इसी से इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र शुदी प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी आरंभ माना जाता है। इस उत्सव के बाद ही चौत्र महीने का आरंभ होता है। अत: यह पर्व नवसंवत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है। इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म हुआ था, इस कारण इसे मन्वादितिथि कहते हैं।

होली का पहला काम झंडा या डंडा गाड़ना होता है। इसे किसी सार्वजनिक स्थल या घर के आहाते में गाड़ा जाता है। इसके पास ही होलिका की अग्नि इकट्ठी की जाती है। होली से काफ़ी दिन पहले से ही यह सब तैयारियाँ शुरु हो जाती हैं। पर्व का पहला दिन होलिका दहन का दिन कहलाता है। इस दिन चौराहों पर व जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की गई होती है, वहाँ होली जलाई जाती है। इसमें लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रुप से होते हैं। कई स्थलों पर होलिका में भरभोलिए जलाने की भी परंपरा है। भरभोलिए गाय के गोबर से बने ऐसे उपले होते हैं जिनके बीच में छेद होता है। इस छेद में मूँज की रस्सी

डाल कर माला बनाई जाती है। एक माला में सात भरभोलिए होते हैं। होली में आग लगाने से पहले इस माला को भाइयों के सिर के ट्टपर से सात बार घूमा कर फेंक दिया जाता है। रात को होलिका दहन के समय यह माला होलिका के साथ जला दी जाती है। इसका यह आशय है कि होली के साथ भाइयों पर लगी बुरी नज़र भी जल जाए। लकड़ियों व उपलों से बनी इस होली का दोपहर से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। घरों में बने पकवानों का यहाँ भोग लगाया जाता है। दिन ढलने पर ज्योतिषियों द्वारा निकाले मुहूर्त पर होली का दहन किया जाता है। इस आग में नई फसल की गेहूँ की बालियों और चने के होले को भी भूना जाता है। होलिका का दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है। यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है। गाँवों में लोग देर रात तक होली के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं।

होली से अगला दिन धूलिवंदन कहलाता है। इस दिन लोग रंगों से खेलते हैं। सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है। लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। रंग खेलने के बाद देर दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर सबसे मिलने जाते हैं। प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

होली के दिन घरों में खीर, पूरी और पूड़े आदि विभिन्न व्यंजन (खाद्य पदार्थ) पकाए जाते हैं। इस अवसर पर अनेक मिठाइयाँ बनाई जाती हैं जिनमें गुझियों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बेसन के सेव और दहीबड़े भी सामान्य रुप से उत्तर प्रदेश में रहने वाले हर परिवार में बनाए व खिलाए जाते हैं। कांजी, भांग और ठंडाई इस पर्व के विशेष पेय होते हैं। पर ये कुछ ही लोगों को भाते हैं। इस अवसर पर उत्तरी भारत के प्राय: सभी राज्यों के सरकारी कार्यालयों में अवकाश रहता है, पर दक्षिण भारत में उतना लोकप्रिय न होने की वज़ह से इस दिन सरकारी संस्थानों में अवकाश नहीं रहता।

विशिष्ट उत्सव

भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में भिन्नता के साथ मनाया जाता है। ब्रज की होली आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। बरसाने की लठमार होली काफ़ी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं। इसी प्रकार मथुरा और वृंदावन में भी 10 दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है। कुमाऊँ की गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियाँ होती हैं। यह सब होली के कई दिनों पहले शुरु हो जाता है। हरियाणा की धुलंडी में भाभी द्वारा देवर को सताए जाने की प्रथा है। बंगाल की दोल जात्रा चौतन्य महाप्रभु के जन्मदिन के रुप में मनाई जाती है। जलूस निकलते हैं और गाना बजाना भी साथ रहता है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र की रंग पंचमी में सूखा गुलाल खेलने, गोवा के शिमगो में जलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा पंजाब के होला मोहल्ला में सिक्खों द्वारा शक्ति प्रदर्शन की परंपरा है। तमिलनाडु की कमन पोडिगई मुख्य रुप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोतसव है जबकि मणिपुर के याओसांग में योंगसांग उस नन्हीं झोंपड़ी का नाम है जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के लिए होली सबसे बड़ा पर्व है, छत्तीसगढ़ की होरी में लोक गीतों की अद्भुत परंपरा है और मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के आदिवासी इलाकों में बेहद धूमधाम से मनाया जाता है भगोरिया, जो होली का ही एक रुप है। बिहार का फगुआ जम कर मौज मस्ती करने का पर्व है और नेपाल की होली में इस पर धार्मिक व सांस्कृतिक रंग दिखाई देता है। इसी प्रकार विभिन्न देशों में बसे प्रवासियों तथा धार्मिक संस्थाओं जैसे इस्कॉन या वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में अलग अलग प्रकार से होली के शृंगार व उत्सव मनाने की परंपरा है जिसमें अनेक समानताएँ और भिन्नताएँ हैं।

होली मनाने का तरीका

होली की पूर्व संध्या पर यानि कि होली पूजा वाले दिन शाम को बड़ी मात्रा में होलिका दहन किया जाता है और लोग अग्नि की पूजा करते हैं। होली की परिक्रमा शुभ मानी जाती है। किसी सार्वजनिक स्थल या घर के आहाते में उपले व लकड़ी से होली तैयार की जाती है। होली से काफ़ी दिन पहले से ही इसकी तैयारियाँ शुरु हो जाती हैं। अग्नि के लिए एकत्र सामग्री में लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रुप से होते हैं। गाय के गोबर से बने ऐसे उपले जिनके बीच में छेद होता है जिनको गुलरी, भरभोलिए या झाल आदि कई नामों से अलग अलग क्षेत्र में जाना जाता है । इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है।

लकड़ियों व उपलों से बनी इस होली का सुबह से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। होली के दिन घरों में खीर, पूरी और पकवान बनाए जाते हैं। घरों में बने पकवानों से भोग लगाया जाता है। दिन ढलने पर मुहूर्त के अनुसार होली का दहन किया जाता है। इसी में से आग ले जाकर घरों के आंगन में रखी निजी पारिवारिक होली में आग लगाई जाती है। इस आग में गेहूँ, जौ की बालियों और चने के होले को भी भूना जाता है। दूसरे दिन सुबह से ही लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि लगाते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। सुबह होते ही लोग रंगों से खेलते अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से ही सबका स्वागत किया जाता है। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

होली के अवसर पर सबसे अधिक खुश बच्चे होते हैं वह रंग-बिरंगी पिचकारी को अपने सीने से लगाए, सब पर रंग डालते भागते दौड़ते मजे लेते हैं । पूरे मोहल्ले में भागते फिरते इनकी आवाज सुन सकते हैं होली है..। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

आधुनिक काल में

होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, लेकिन होली के भी अनेक रुप देखने को मिलते हैं। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भांग-ठंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फ़िल्मी गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रुप हैं। लेकिन इससे होली पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फाग, धमार, चौती और ठुमरी की शान में कमी नहीं आती। अनेक लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं। इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाबजल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं।ख36, होली की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अंतर्राष्ट्रीय रुप भी आकार लेने लगा है। बाज़ार में इसकी उपयोगिता का अंदाज़ इस साल होली के अवसर पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान केन्ज़ोआमूर द्वारा जारी किए गए नए इत्र होली है से लगाया जा सकता है।

प्रचलित संस्कृति में साहित्य

प्राचीन काल के संस्कृत साहित्य में होली के अनेक रुपों का विस्तृत वर्णन है। श्रीमद्भागवत महापुराण में रसों के समूह रास का वर्णन है। अन्य रचनाओं में रंग नामक उत्सव का वर्णन है जिनमें हर्ष की प्रियदर्शिका व रत्नावलीख्क, तथा कालिदास की कुमारसंभवम् तथा मालविकाग्निमित्रम् शामिल हैं। कालिदास रचित ऋतुसंहार में पूरा एक सर्ग ही श्वसन्तोत्सवश को अर्पित है। भारवि, माघ और अन्य कई संस्कृत कवियों ने वसन्त की खूब चर्चा की है। चंद बरदाई द्वारा रचित हिंदी के पहले महाकाव्य पृथ्वीराज रासो में होली का वर्णन है। भक्तिकाल और रीतिकाल के हिन्दी साहित्य में होली और फाल्गुन माह का विशिष्ट महत्व रहा है। आदिकालीन कवि विद्यापति से लेकर भक्तिकालीन सूरदास, रहीम, रसखान, पद्माकर, जायसी, मीराबाई, कबीर और रीतिकालीन बिहारी, केशव, घनानंद आदि अनेक कवियों को यह विषय प्रिय रहा है। महाकवि सूरदास ने वसन्त एवं होली पर 78 पद लिखे हैं। पद्माकर ने भी होली विषयक प्रचुर रचनाएँ की हैं। इस विषय के माध्यम से कवियों ने जहाँ एक ओर नितान्त लौकिक नायक नायिका के बीच खेली गई अनुराग और प्रीति की होली का वर्णन किया है, वहीं राधा कृष्ण के बीच खेली गई प्रेम और छेड़छाड़ से भरी होली के माध्यम से सगुण साकार भक्तिमय प्रेम और निर्गुण निराकार भक्तिमय प्रेम का निष्पादन कर डाला है। सूफ़ी संत हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, अमीर खुसरो और बहादुर शाह ज़फ़र जैसे मुस्लिम संप्रदाय का पालन करने वाले कवियों ने भी होली पर सुंदर रचनाएँ लिखी हैं जो आज भी जन सामान्य में लोकप्रिय हैं। आधुनिक हिंदी कहानियों प्रेमचंद की राजा हरदोल, प्रभु जोशी की अलग अलग तीलियाँ, तेजेंद्र शर्मा की एक बार फिर होली, ओम प्रकाश अवस्थी की होली मंगलमय हो तथा स्वदेश राणा की हो ली में होली के अलग अलग रुप देखने को मिलते हैं। भारतीय फ़िल्मों में भी होली के दृश्यों और गीतों को सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है। इस दृष्टि से शशि कपूर की उत्सव, यश चोपड़ा की सिलसिला, वी.शांताराम की झनक झनक पायल बाजे और नवरंग इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

संगीत

भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक तथा फ़िल्मी संगीत की परम्पराओं में होली का विशेष महत्व है। शास्त्रीय संगीत में धमार का होली से गहरा संबंध है, हालाँकि ध्रुपद, धमार, छोटे व बड़े ख्याल और ठुमरी में भी होली के गीतों का सौंदर्य देखते ही बनता है। कथक नृत्य के साथ होली, धमार और ठुमरी पर प्रस्तुत की जाने वाली अनेक सुंदर बंदिशें जैसे चलो गुंइयां आज खेलें होरी कन्हैया घर आज भी अत्यंत लोकप्रिय हैं। ध्रुपद में गाये जाने वाली एक लोकप्रिय बंदिश है खेलत हरी संग सकल, रंग भरी होरी सखी। भारतीय शास्त्रीय संगीत में कुछ राग ऐसे हैं जिनमें होली के गीत विशेष रुप से गाए जाते हैं। बसंत, बहार, हिंडोल और काफ़ी ऐसे ही राग हैं। होली पर गाने बजाने का अपने आप वातावरण बन जाता है और जन जन पर इसका रंग छाने लगता है। उपशास्त्रीय संगीत में चौती, दादरा और ठुमरी में अनेक प्रसिद्ध होलियाँ हैं। होली के अवसर पर संगीत की लोकप्रियता का अंदाज़ इसी बात से लगाया जा सकता है कि संगीत की एक विशेष शैली का नाम ही होली है, जिसमें अलग अलग प्रांतों में होली के विभिन्न वर्णन सुनने को मिलते है जिसमें उस स्थान का इतिहास और धार्मिक महत्व छुपा होता है। जहाँ ब्रजधाम में राधा और कृष्ण के होली खेलने के वर्णन मिलते हैं वहीं अवध में राम और सीता के जैसे होली खेलें रघुवीरा अवध में। राजस्थान के अजमेर शहर में ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर गाई जाने वाली होली का विशेष रंग है। उनकी एक प्रसिद्ध होली है आज रंग है री मन रंग है, अपने महबूब के घर रंग है री। इसी प्रकार शंकर जी से संबंधित एक होली में दिगंबर खेले मसाने में होली कह कर शिव द्वारा श्मशान में होली खेलने का वर्णन मिलता है। भारतीय फिल्मों में भी अलग अलग रागों पर आधारित होली के गीत प्रस्तुत किये गए हैं जो काफी लोकप्रिय हुए हैं। सिलसिला के गीत रंग बरसे भीगे चुनर वाली, रंग बरसे और नवरंग के आया होली का त्योहार, उड़े रंगों की बौछार, को आज भी लोग भूल नहीं पाए हैं।

स्वास्थ चिंताएँ

प्राचीन काल में लोग चन्दन और गुलाल से ही होली खेलते थे। लेकिन आज गुलाल, प्राकृतिक रंगों के साथ साथ रासायनिक रंगों का प्रचलन बढ़ गया है। ये रंग स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक हैं जो त्वचा के साथ साथ आँखों पर भी बुरा असर करते हैं।

होली की रंगबिरंगी शुभकामनाएँ...

साभार : विकिपिडिया

संपादकिय

जड़ों की तलाश

कांग्रेस दरअसल, अपनी दलगत जमीन काफी पहले खो चुकी है। पहले ब्लाक, गांव पंचायत स्तर पर उसके कार्यकर्ता हुआ करते थे, जो स्थानीय लोगों की मदद के लिए तत्पर रहते थे। अब वे कहीं नहीं दिखते। गांव की तो बात क्या, जिला मुख्यालय के स्तर पर भी इक्का-दुक्का लोग ही नजर आते हैं।

इस बार पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में अगर किसी को सबसे अधिक दुर्गति झेलनी पड़ी है, तो कांग्रेस को। न सिर्फ वह उन राज्यों में भी अपने दिग्गज नेताओं तक को चुनाव नहीं जिता पाई जहां उसकी पहले से सरकार थी या वह मुख्य विपक्षी दल के रुप में थी, बल्कि राष्ट्रीय पार्टी होते हुए भी उसे छोटे क्षेत्रीय दलों से भी नीचे के पायदान पर पहुंच कर सब्र करना पड़ा। उत्तर प्रदेश में जिस तरह प्रियंका गांधी ने अपनी ताकत झोंकी और हर चुनाव क्षेत्र में पहुंच कर जनसंपर्क किया था, महिलाओं, किसानों और बेरोजगार नौजवानों के भविष्य को लेकर रणनीति बनाई थी, उससे लगा था कि कांग्रेस इस बार अपनी जड़ें फिर से रोपने में कामयाब हो पाएगी।

मगर सारे कयास, सारी उम्मीदें धरी की धरी रह गईं। इसलिए स्वाभाविक ही कुछ लोग पूछने लगे हैं कि भाजपा ने जो कांग्रेस मुक्त भारत का नारा दिया था, क्या वह उसमें सफल हो गई है। हालांकि इन चुनाव नतीजों के बाद कांग्रेस निराश नहीं दिख रही है। उसने नया हौसला भरते हुए इन नतीजों की समीक्षा करने, अपनी कमियों पर मंथन करने की घोषणा की है। जल्दी ही कार्यकारिणी की बैठक बुलाने और उसमें आगे की रणनीति पर विचार करने का दम भरा है। मगर वह इसमें कितनी कामयाब हो पाएगी, देखने की बात होगी।

इन चुनाव नतीजों से बहुत सारे लोग हतप्रभ हैं। उन्हें समझ नहीं आ रहा कि आखिर ऐसा हुआ कैसे। कुछ लोग मान रहे हैं कि मतदाता को मुफ्त राशन और गुंडाराज से मुक्ति के भरोसे ने भाजपा के साथ जोड़े रखा। मगर इस हकीकत से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि अब पुराने ढंग के चुनाव नहीं रह गए हैं। मतदाता जागरुक हो गया है और वह प्रतिनिधियों के कार्य-व्यवहार को बहुत अच्छी तरह जानता-समझाता है। ऐसे में जिन राजनीतिक दलों के नेता लगातार उसके सुख-दुख में साथ रहे, उन्हें लोगों ने अपना समर्थन दिया। जो लोग केवल सैद्धांतिक बातें करते हुए चुनाव के समय रथ पर सवार होकर उनके पास आए, उन्हें बहुत तवज्जो नहीं दी।

ऐसा भी नहीं कि भाजपा के शासन में लोगों को तकलीफें नहीं उठानी पड़ीं, प्रशासन की तरफ से गलतियां और लापरवाहियां नहीं हुईं, पर हकीकत यह भी है कि भाजपा के नेता और कार्यकर्ता लगातार उनके संपर्क में रहे। हर गांव, हर मुहल्ले में भाजपा के कार्यकर्ता सक्रिय हैं और वे लोगों की मदद के लिए तत्पर दिखते हैं। सपा, बसपा, कांग्रेस या अन्य किसी दल के कार्यकर्ता इस तरह दिखते तक नहीं।

कांग्रेस दरअसल, अपनी दलगत जमीन काफी पहले खो चुकी है। पहले ब्लाक, गांव पंचायत स्तर पर उसके कार्यकर्ता हुआ करते थे, जो स्थानीय लोगों की मदद के लिए तत्पर रहते थे। अब वे कहीं नहीं दिखते। गांव की तो बात क्या, जिला मुख्यालय के स्तर पर भी इक्का-दुक्का लोग ही नजर आते हैं। फिर कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व के काम करने का तरीका दिल्ली के वातानुकूलित कमरों में बैठ कर सैद्धांतिक रणनीति तैयार करने का है। ऐसे वरिष्ठ नेताओं का तादाद कांग्रेस में बड़ी है, जो कभी जमीनी स्तर पर काम करने नहीं उतरे।

भाजपा इस मामले में ज्यादा लोकतांत्रिक दिखती है। उसकी केंद्रीय कमान के बड़े नेता भी जमीन पर उतर कर अपने मुहल्ला स्तर के कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाते रहते हैं। अगर कांग्रेस को अपनी खोई जमीन पानी और भाजपा के टक्कर में खुद को खड़ा करना है, तो उसे भाजपा की कार्य संस्कृति अपनानी पड़ेगी।

१३३ करोड़ के कामों के लिए बजट में प्रावधान

विधायक विनोद अग्रवाल के प्रयासों से बाघ प्रकल्प की 45 साल पुरानी नहर की दुरुस्ती का हुआ मार्ग प्रशस्त

बुलंद गोंदिया - जिले के गोंदिया तहसील सहित आमगांव व सालेकसा तहसील के कुल 165 गांव की 35718 हेक्टर सिंचाई क्षेत्र को सिंचित करने के उद्देश्य से बनाई गई बाघ परियोजना की दायी नहर पिछले 45 वर्षों से दुरुस्ती व रखरखाव न हो पाने के चलते जगह-जगह से टूट-फुट व जीर्ण हो चली थीं, वही नहर के निचले सतह पर कीचड़ व घास उग आने पर इसके बहाव में कमी आ गई थी। जिन क्षेत्रों को जितना सिंचन हेतु जल मिलना चाहिये नहीं मिल पा रहा था।

गोंदिया विधानसभा क्षेत्र के विधायक विनोद अग्रवाल ने इस सिंचन व्यवस्था को पटरी पर लाने व सिंचाई क्षेत्र को हरित बनाने विदर्भ पाटबंधारे विकास महामंडल के जल संपदा विभाग के माध्यम से महाराष्ट्र सरकार के जलसंम्पदा मंत्री जयंत पाटील एवं वित्त व नियोजन मंत्री अजित पवार से भेंट कर इसकी विशेष दुरुस्ती, नवीनीकरण हेतु 133 करोड़ रुपयों का बजट में प्रावधान करने हेतु सरकार से अनुरोध किया था। जिस पर सरकार ने कृषि कार्य को बढ़ावा देने एवं किसानों को उन्नत बढ़ाने के उद्देश्य से इस बजट में बाघ प्रकल्प नहर के नवीनीकरण व दुरुस्ती कार्यो हेतु लगने वाली निधि का प्रावधान करने विधायक विनोद अग्रवाल को भरोसा जताया था। महाराष्ट्र सरकार ने शासन निर्णय प्रमाप्र-2018 (प्र.क्र.405/2018/सि. व्य.(कामे) मंत्रालय मुंबई, दिनांक 13/09/2019 के तहत 11 मार्च को प्रस्तुत अपने वर्ष 2022-23 के आर्थिक बजट में बाघ प्रकल्प की दार्यी नहर के दुरुस्ती, नवीनीकरण हेतु 133 करोड़ 78 लाख 52 हजार 419 रुपयों का प्रावधान किया है। बजट में सिंचाई के लिए वरदान बाघ नहर के दुरुस्ती व नवीनीकरण हेतु घोषणा होने पर 45 साल पुरानी नहर फिर जीवित होंने का मार्ग प्रशस्त हो गया है जो सिंचाई के लिये वरदान साबित होगा। इस नहर के साथ ही उसके गेट, पुल एवं उपनहर की दुरुस्ती होगी। शासन के आर्थिक बजट में नहर के पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त होने पर खेतिहर किसान वर्ग ने खुशी जाहिर की। बजट में प्रावधान होने से अब विद्या व नियोजन विभाग की मंजूरी मिल गई है। दो साल के भीतर ही नहर की दुरुस्ती, गेट, पुलों का निर्माण, नवीनीकरण, सफाई व अन्य कार्य पूर्ण किये जायेंगे।

घर के सामने खड़ी मोटरसाइकिल चोरी

मंदिर सहित 2 दूकानों के भी ताला टूटने से फैली सनसनी

देवरी शहर के मुख्य मार्ग से दूर्गा चौक स्थित दूर्गा मंदिर में रविवार देर रात चोरी की अलग अलग घटनाओं से शहर में सनसनी फैल गई। अज्ञात चोरों द्वारा गुरुनानक मेडिकल, रजनी साईकिल स्टोर्स तथा दूर्गा मंदिर का ताला तोड़ा गया व दानपेटी का ताला तोड़कर पैसे चुराने की जानकारी प्राप्त हुई है। जबकि निलम बर्तन भंडार के सामने खड़ी बजाज सीटी 100 मोटरसाइकिल (एमएच35 एन2119) चोरी कर लिया गया। इसके अलावा 1-2 अन्य दूकानों में भी ताला तोड़ने की कोशिश की गई है। मोटरसाइकिल चोरी की घटना पड़ोस की कपड़ा दूकान के सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। लेकिन चोर का चेहरा स्पष्ट नहीं है। देवरी पुलिस ने निलम बर्तन भंडार के संचालक रितेश कुमार अग्रवाल की शिकायत पर अपर पुलिस निरीक्षक आनंदराव घाडगे के मार्गदर्शन में भादंवि की धारा 379 के अंतर्गत मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

मारवाड़ी युवक मंडल द्वारा आरोग्य २०२२ - भव्य नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच एवं रक्तदान शिविर का आयोजित

गोंदिया जिले में मारवाड़ी समाज के प्रमुख संगठन श्री मारवाड़ी युवक मंडल द्वारा समाजबंधुओं के लिए परियोजना निर्देशक डॉ.अक्षत अग्रवाल के प्रतिनिधित्व में भव्य नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर तथा परियोजना निर्देशक आदेश शर्मा एवं आलोक अग्रवाल के प्रतिनिधित्व में भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन दिनांक 13 मार्च 2022 को सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक राजस्थान कन्या विद्यालय, गोंदिया में आयोजित किया गया। विधायक विनोद अग्रवाल, संस्था अध्यक्ष महेश गोयल, राजस्थानी महिला मंडल अध्यक्ष रश्मि खंडेलवाल, वरिष्ठ सर्जन डॉ.निर्मला जयपुरिया, उद्योगपति पवन अग्रवाल, हुकुमचंद अग्रवाल, चेतन बजाज, अशोक अग्रवाल (पी.ए) एवं प्रकाश कोठारी आदि गणमान्यों की प्रमुख उपस्थिति में सम्पन्न हुआ उद्घाटन कार्यक्रम।

नि:शुल्क दवाई वितरण

स्वप्न खंडेलवाल, गोल्डलाइन फार्मासीटूकल लिमिटेड, इंदौर के सौजन्य से नि:शुल्क दवाई वितरण का भी कार्य समाजबंधुओं के लिए किया गया। साथ ही कोशिश चेरिटेबल पैथोलॉजी लेबोरटरी के सहयोग से सभी पैथोलॉजी टेस्ट विशेष छुट के साथ की गई।

इन डॉक्टर्स ने दी अपनी सेवाएं

आयोजित स्वास्थ्य जांच शिविर के कार्यक्रम में प्रमुख रुप से बाल दंत रोग विशेषज्ञ डॉ.अक्षत अग्रवाल, हृदयरोग एवं प्रत्यारोपण विशेषज्ञ डॉ.अभिषेक भालोटिया, न्यूरो फिजीशियन डॉ.कुशल अग्रवाल, कैन्सर विशेषज्ञ डॉ.समीक्षा दुबे, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ.जुही भालोटिया, जनरल सर्जन डॉ.सचिन केलनका, मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ.प्रवीण वर्मा, मुत्ररोग विशेषज्ञ डॉ.पराग जयपुरिया, बालरोग विशेषज्ञ डॉ.सृष्टि केलनका, नाक कान गला रोग विशेषज्ञ डॉ.गौरव अग्रवाल, नेत्ररोग शल्य चिकित्सक एवं कार्निया विशेषज्ञ डॉ.निधी जयपुरिया, दंत एवं मुखरोग विशेषज्ञ डॉ.सोनल अग्रवाल, आयुर्वेदाचार्य डॉ.पृथा चंद्रवंशी, रेडियोलॉजिस्ट डॉ.आदर्श अग्रवाल एवं होमियोपैथी विशेषज्ञ डॉ.आकांक्षा अग्रवाल ने अपनी सेवाएं दी। संस्था सचिव रितेश अग्रवाल ने बताया कि इस स्वास्थ जॉच शिविर का 300 से अधिक समाजबंधुओ ने लाभ लिया। 51 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया तथा 100 से अधिक समाजबंधुओं ने पैथोलॉजी मे विभिन्न किस्म की जॉच करवाई। स्वास्थ जाँच शिविर के पश्चात दिनभर सेवा देनेवाले सभी डॉक्टर्स का मारवाड़ी युवक मंडल एवं राजस्थानी महिला मंडल के पदाधिकारियों द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सत्कार एवं सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन रवि मूंदड़ा ने किया। कार्यक्रम की सफलता हेतु सभी परियोजना निर्देशक, मारवाड़ी युवक मंडल एवं राजस्थानी महिला मंडल कार्यकारिणी के सभी सदस्य एवं राजस्थान कन्या विद्यालय के सभी शिक्षक, शिक्षिकाओं एवं स्टॉफ ने अथक प्रयास किये।

नगर परिषद की प्रभाग रचना प्रारुप प्रकाशित

17 मार्च तक दिए जा सकते आक्षेप

बुलंद गोंदिया - राज्य चुनाव आयोग के 22 फरवरी 2022 के पत्र अनुसार गोंदिया जिले की नगर परिषद के आम चुनाव के लिए प्रभाग रचना कार्यक्रम 2022 घोषित किया गया है। जिसमें गोंदिया-तिरोड़ा व आमगांव नगर परिषद की प्रभाग रचना का प्रारुप 10 मार्च को सभी नगर परिषद कार्यालय व चुनाव आयोग की वेबसाइट पर प्रकाशित किया गया है। जिसमें आक्षेप व सुझाव 17 मार्च तक मंगाए गए हैं। यदि किसी भी नागरिक को प्रभाग रचना पर आक्षेप या सुझाव देना है तो संबंधित नगर परिषद के मुख्य अधिकारी के समक्ष पेश कर सकते हैं। ऐसी जानकारी जिलाधिकारी नयना गुंडे द्वारा दी गई है। नगर परिषद कार्यालय के में आम चुनाव 2022 के लिए प्रभाग रचना प्रारुप 10 मार्च की सुबह 11 बजे प्रकाशित करने के पश्चात कार्यालय में आगामी चुनाव लड़ने वाले इच्छुक उम्मीदवारों व नागरिकों द्वारा पहुंच कर प्रभाग रचना के प्रारुप का निरीक्षण किया है। गोंदिया नगर परिषद के घोषित की गई प्रारुप प्रभाग रचना में 2011 की जनगणना के अनुसार 132813 मतदाता है। जिसमें अनुसूचित जाति के 26004 व अनुसूचित जनजाति के 4346 मतदाताओं का समावेश है। प्रारुप प्रभाग रचना घोषित की गयी जिसमें मतदाता संख्या निम्नानुसार है- प्रभाग क्रमांक 1 में 6071 मतदाता, प्रभाग 2 - 6121, प्रभाग 3 - 6573, प्रभाग 4 - 6353, प्रभाग 5 - 5938, प्रभाग 6 - 6230, प्रभाग 7 - 6385, प्रभाग 8 - 5619, प्रभाग 9 - 6137, प्रभाग 10 - 6416, प्रभाग 11 - 6275, प्रभाग 12 - 5569, प्रभाग 13 - 5779, प्रभाग 14 - 5457, प्रभाग 15 - 5738, प्रभाग 16 - 6467, प्रभाग 17 - 5795, प्रभाग 18 - 5721, प्रभाग 19 - 5991, प्रभाग 20 - 5923, प्रभाग 21 - 6092 तथा प्रभाग क्र. 22 में 6168 मतदाताओं का समावेश है।

१२ वर्षीय छात्र की तालाब में डूबकर मौत

राहत बचाव दल व स्थानीय मछुआरों ने निकाला शव कुड़वा एमआईटी के पास तलाव की घटना

बुलंद गोंदिया - गोंदिया शहर के समीप कुड़वा ग्राम निवासी 12 वर्षीय छात्र उज्जवल कुवरलाल कुंभलकर की एमआयईटी के समीप के तालाब में डूब कर मौत हो गई। जिसके शव को जिला बचाव व शोधपथक तथा स्थानीय मछुआरों की सहायता से निकाला गया। उपरोक्त घटना 15 मार्च की शाम 6 बजे के दौरान घटित हुई है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार गोंदिया शहर से लगे ग्राम कुडवा के वार्ड क्रमांक 1 मारुति चौक निवासी उज्जवल कुंभलकर कक्षा छठवीं का छात्र 15 मार्च की शाम खेलते समय कुड़वा के एमआयईटी व मोक्षधाम के समीप स्थित तालाब के पास गया था। जहां उसका संतुलन बिगड़ जाने से तालाब में डूब कर उसकी मौत

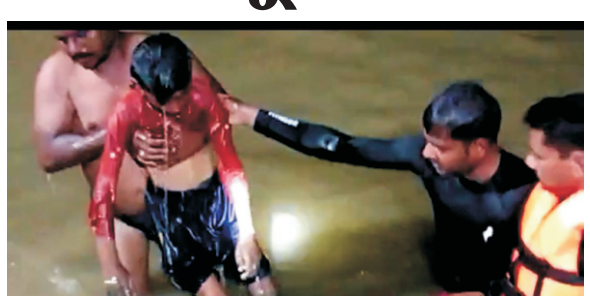

हो गई। घटना की जानकारी रामनगर पुलिस को प्राप्त होते ही घटनास्थल पर पहुंच जिला आपदा व शोध बचाओ विभाग को इसकी सूचना दी। जिसके पश्चात जिला आपदा व बचावपथक के कर्मचारियों तथा स्थानीय मछुआरों की सहायता से मृतक छात्र के शव को तालाब से निकाला गया। उपरोक्त मामले में रामनगर पुलिस थाने में मामला दर्ज कर आगे की जांच की जा रही है।

विश्व महिला दिवस

आपदा को अवसर में बदलें - प्रा.सविता बेदरकर

बुलंद गोंदिया - महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। बहनों, भारत का संविधान हमारे साथ है। आपदा को अवसर में बदलकर खुद में स्वाभिमान निर्माण करे ऐसा आव्हान प्रा.सविता बेदारकर ने किया। आधार महिला संगठन, श्रीनगर गोंदिया द्वारा आयोजित विश्व महिला दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन सविता बेदारकर ने किया। इस अवसर पर उद्घाटक वक्ता के रुप में बोल रही थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगरसेविका भावना कदम व निर्मला मिश्रा, ज्योत्सना सहारे, आज फोरम की मंजू कटरे, दिव्या भगत, वंदना शिवतारे, नेहा मिश्रा मंच पर मौजूद रहीं। इस अवसर पर आगे बोलते हुए प्रा.बेदारकर ने कहा कि उन्होंने कन्याभ्रण हत्या, महिलाओं पर अत्याचार, समाज में मानसिक और शारीरिक शोषण की प्रथा पर कड़ा प्रहार किया। इस अवसर पर बोलते हुए पार्षद भावना कदम ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि लोगों के जीवन को तबाह करने वाली करोना जैसी महामारी कभी वापस नहीं आए। इस मौके पर कुछ महिलाओं ने नृत्य प्रस्तुत कर कार्यक्रम में रंग भर दिया। प्रस्तावना में कार्यक्रम की रुपरेखा संजय राऊत ने विषद की। कार्यक्रम का संचालन खुशी धार्मिक व शारदा अंबेडारे ने किया, जबकि शिक्षिका कल्पना शुक्ला ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की सफलतार्थ संयोजीका रुपाली योगेश रोकडे, स्वाति आलोक पवार, गीता राऊत, कोमल विनोद राऊत, संध्या गंगभोज, मीना मनीष चौरागड़े, ममता नितीन खाड़े, उमा अनिल राऊत, वंदना मुरली बावनकर, रोहिणी मिथुन राऊत, वर्षा सुनील रोकडे, सुमन राऊत, संगीता राऊत, जया झाडे, प्रीति सेलोकर, बेबी बाई, पूजा खाड़े, तारा रोकाडे, दिव्या आंबेडारे, संगीता रोकडे, तुलसी बिजेवर, पुष्पा दुबे, शुल्का यादव, भाग्यश्री अंबेडारे ने सहयोग किया।

राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना महिला संगठन

बुलंद गोंदिया - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर समाज की मातृ शक्तियों का व विभिन्न क्षेत्रों मे उत्कृष्ट कार्य करनेवाली महिलाओं का राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना महिला संगठन द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी राष्ट्रीय राजपूत करनी सेना जिला गोंदिया महिला संगठन के द्वारा महिला दिवस के उपलक्ष्य पर महिला शक्ति का सम्मान किया गया। उसमें समाज की 20 वरिष्ठ महिलाओं का सम्मान किया गया। जिसमें एक समाज की ऐसी महिला थी जिनके पति के मृत्यु पश्चात उन्होंने सास व देवर के साथ अपने बच्चों का भी पालन-पोषण मजदूरी करके किया और उनके साथ गोंदिया की कुछ सशक्त नारी जिन्होंने अपने-अपन क्षेत्रों में समाज को अपनी सेवाओं से महत्पूर्ण योगदान दिया। सम्मानित की गई महिलाओं में सुषमा यदुवंशी, माधुरी नाशरे, मंजू कटरे, भावना कदम, सविता बेदलकर, गरिमा बग्गा, पूजा तिवारी, आशा सिंह आदि को सम्मानित किया गया।

महिलाओं को आत्मसुरक्षा का प्रशिक्षण

बुलंद गोंदिया - महिला दिवस के उपलक्ष्य में विवेक तायक्वांडो अकादमी और फोण्डल अकादमी गोंदिया के सयुक्त विद्यमान से युवतियों व महिलाओं को आत्मसुरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। आत्मसुरक्षा प्रशिक्षण ताइक्वांडो (एन.आई.एस.) कोच निलेश फुलबांधे द्वारा दिया गया। कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के रुप में प्रीति होरा, नीलम अग्रवाल, मुजीब बेग उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्वा अग्रवाल, कुशल लिल्हारे, अमन आसवानी, विभोर अग्रवाल, सरल गमबानी, शुभ चौधरी, मयंक जैस्वाल, प्रथम जैस्वाल, अयान खान, दानियाल खान, रिया चौधरी, माही चौधरी, कृतिका कोडरा ओम भदुपोते, प्रताप भदुपोते, यश शर्मा, तनय गजभिये ने परिश्रम किया।

खेल क्षेत्र में यथासंभव सहयोग - जिलाधिकारी गुंडे

बुलंद गोंदिया - विश्व महिला दिवस के अवसर पर सशक्त नारी संघटना गोंदिया, गोंदिया जिला क्रिकेट एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में तथा महिलाओं को समान अधिकार दिलाने के उद्देश्य से महिला क्रिकेट मैच का आयोजन इंदिरा गांधी स्टेडियम में किया गया था। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रुप में गोंदिया की जिलाधिकारी नयना गुंडे उपस्थित थी। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि जिले में महिलाओं को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए जिला प्रशासन, जिला खेल प्रशासन द्वारा सभी प्रकार की यथासंभव सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। उपरोक्त क्रिकेट मैच में सशक्त नारी, सुपर वूमेन, आधार संगठन, अखिल भारतीय कलार कलाल कलवार महिला संगठन व अन्य महिलाओं व युवतियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर शिखा सुरेश पिपलेवार द्वारा जिलाधिकारी महोदया व अन्य अतिथिगण को सशक्त नारी स्मारिका मग भेट दिए गए। साथ ही हॉकी एसोसिएशन ने भी संयुक्त रुप से कैंप का उद्घाटन किया। इस पहल से अंत में शिखा सुरेश पिपलेवार द्वारा खासदार क्रीडा महोत्सव में भी लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कदम, खेता व अन्य खासदार क्रीडा महोत्सव के संयोजकों से इस विषय पर चर्चा करके खासदार क्रीडा महोत्सव में पहल स्वरुप बैडमिंटन टूर्नामेंट में महिलाओं व युवतियों का सहभाग सुनिश्चित किया। जिससे आनेवाले समय में हर खेल में लड़कियों व महिलाओं को खुद से समान अधिकार दिया जाए। इस कार्यक्रम में विशेष रुप से जिलाधिकारी नयना गुंडे, अखिल भारतीय संचालक सशक्त नारी शिखा पिपलेवार, जिला क्रीडा अधिकारी राठौड़, कार्यकारी अभियंता सोनाली सोनुले, भावना कदम, सशक्त नारी गोंदिया जिला हेड सिंधु पिपलेवार, शोभा धुवारे, प्राची प्रमोद गुड़धे, जीवनज्योती रघुवंशी, शर्मिला पाल, शताब्दी पाल, लता बाजपेई, स्वाति वाल्दे, सुनीता डोहरे, सुनीता धपाड़े, सुरेश पिपलेवार, कदम, गुडधे, अवि नागपुरे, राजू लिमए, नियाज़ शेख व अन्य उपस्थित थे।

सालेकसा में कर्तव्यनिष्ट महिलाओं का सत्कार

सालेक्सा - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, महाराष्ट्र राज्य मराठी पत्रकार संघ सालेकसा ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सालेकसा तहसील की महिलाओं को सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र राज्य मराठी पत्रकार संघ के अध्यक्ष राजू दोनोडे ने की। उद्घाटन जिप सदस्य विमल कटरे के हाथो किया गया। प्रमुख अतिथी के रुप में जिप सदस्य सविता पुराम, जिप सदस्य छाया नागपुरे, जिप सदस्य गीता लिल्हारे, पूर्व बाल कल्याण सभापती लता डोनोडे, पंचायत समिति सदस्य रेखा फुंडे, अर्चना मडावी, वीना कटारे, सुनीता राउत, संतोष बोहरे, प्राचार्य डॉ.ललित जिवानी, थाना प्रभारी अरविंद राउत, सहायक पुलिस निरीक्षक सुनील जानकर, तहसील स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अमित खोडनकर, वन अधिकारी एम.एम. गजभिये और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का परिचय देते हुए तहसील के लोकमत प्रतिनिधि विजय मानकर ने कहा कि तहसील में जमीनीस्तर पर कर्तव्यपरायण महिलाओं को सम्मानित करना और उनके काम के लिए उन्हें सलाम करना आवश्यक है, इसलिए यह सम्मान समारोह रखा गया। इस समय अतिथीयों ने अपने संबोधन मे कहा कि महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझना समाज की एक बड़ी गलती होगी। आज हर क्षेत्र में महिलाओं ने एक अलौकिक छलांग लगाई है। स्त्री को सम्मान प्राप्त करने के अधिकार को समझना चाहिए। इसके अलावा उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं को संबोधित करते हुए कई महत्वपूर्ण मुद्दे प्रस्तुत किये गये। महाराष्ट्र राज्य मराठी पत्रकार संघ का आभार व्यक्त करते हुए डॉ. अपर्णा खुरसेल ने कहा कि प्रेस एसोसिएशन ने हर क्षेत्र में काम करनेवाली महिलाओं पर ध्यान दिया है और उनके काम के मूल्य को पहचाना है। इसलिए प्रेस एसोसिएशन को आज और अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। .

शासन की योजनाओं का मिले लाभ - निर्मला मिश्रा

बुलंद गोंदिया - विश्व महिला दिवस के अवसर पर मालवीय स्कूल प्रांगण में पूर्व पार्षद निर्मला दिलीप मिश्रा की अध्यक्षता में कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि प्रभाग की सभी महिलाओं को शासन की योजनाओं का लाभ मिले, जिसके लिए उन्हें शिक्षित व जागरुक होने की आवश्यकता है। जिसके लिए वे निरंतर कार्य कर रही है। आयोजित कार्यक्रम में मराठी गीतों पर महिलाओं द्वारा रंगारंग नृत्य भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रुप में बौबरडे मैडम प्रमुख अतिथि के रुप में प्राची गुडधे, ज्योत्सना सहारे, लक्ष्मी वालदे उपस्थिति थी। इसके साथ ही अशोका महासंघ (गट) श्रीनगर गोंदिया अध्यक्ष सुनीता धपाडे, उपाध्यक्ष राधा शर्मा, सचिव निर्मला पाटिल, सदस्य दक्षिणा टेंभुर्णीकर, शारदा भूते, अनुराधा कनोजिया, पुष्पा मेंढे, आशा खडोदे, सीता पांडे, ऊर्जा वस्तिस्तर संघ (गट) श्रीनगर गोंदिया की अध्यक्ष अनिता मेश्राम, उपाध्यक्ष दीपा शहारे, सचिव कांता भिमटे, सदस्य निता खापर्डे, लतिका हुमने, पौर्णिमा गौरे, माधुरी खापर्डे, ज्योती लाउत्कर, वनिता नागोसे, गीता मेश्राम, नीलिमा बनसोड, ईशा निखाडे, शालू कृपाले एवं वार्ड की अन्य गणमान्य महिलाएं उपस्थित थी। मंच संचालन लिनता बडोले द्वारा किया गया एवं शालू कृपाले द्वारा आए हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

इन महिलाओं को किया गया सम्मानित : इस वर्ष के विशेष सत्कार के लिये चुनी गयी यमुनाबाई राउत को स्मृति चिन्ह, शॉल, गुलदस्ता और नकद राशी देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा डॉ.किरण सोमानी, प्रोफेसर डॉ.अपर्णा खुरसेल, शिक्षिका ललिता भोगारे, आशा सेविका लता दोनोडे, महिला किसान उमाबाई डहारे, महिला डाकवाहक सायत्रा बहेकर और महिला पुलिस निरीक्षक वैशाली पाटिल को सम्मानित किया गया। महिला नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। जिसमे कमलेश्वरी हेमने प्रथम, प्रतिभा मेंढे द्वितीय और मंजूषा शेंडे को तृतीय स्थान हेतु स्मृति चिन्ह और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

दिव्या भगत का सत्कार

बुलंद गोंदिया - राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर रेलवे विभाग तथा रेलवे सलाहकार समिति गोंदिया की ओर से सामाजिक क्षेत्र मे उत्कृष्ठ कार्य करने तथा रेल्वे विभाग मे यात्रियों के सुविधा, समस्या तथा व्यवस्थापन हेतु अच्छा कार्य करने के लिए दिव्या भगत पारधी का सत्कार किया गया। इस दौरान प्रमुख रुप से रेलवे विभाग के मुख्य वाणिज्य निरीक्षक अरविंद साहू, वाणिज्य निरीक्षक सुजीत कुमार, रेलवे सलाहकार समिति सदस्य छेलबिहारी अग्रवाल, सुरज नशीने, राजेंद्र कावडे हरीश अग्रवाल तथा रेलवे के अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। वरिष्ठ नेता छैलबिहारी अग्रवाल ने एक महिला के रुप मे दिव्या भगत पारधी की सामाजिक सक्रियता की प्रसंशा की। अग्रवाल ने कहा कि सामाजिक क्षेत्र मे विशेष कर महिलाओ के उत्थान के लिए तथा रेल्वे सलाहकार समिती सदस्य के रुप मे दिव्या भगत पारधी हमेशा अपना समय देती रही है। महिला दिवस के अवसर पर सभी महिलाओं को परिवार के साथ साथ सामाजिक भागीदारी या निभाने के लिए आगे आने का आवाहन अग्रवाल तथा समस्त सदस्य ने किया।

लायंस क्लब गोंदिया संजीवनी

बुलंद गोंदिया - लायंस क्लब गोंदिया संजीवनी की शक्ति स्वरुपा समिति द्वारा महिला दिवस के निमित्त नारी शक्ति स्वरुपा कार्यक्रम आयोजित किया गया था। उपरोक्त कार्यक्रम में समाज व परिवार में रहते हुए जीवन संघर्ष के साथ अपनी खुद की मेहनत व कमाई से अपना परिवार का पालन करने व बच्चों का भविष्य बनाने वाली कामकाजी महिलाओं को सम्मानित किया गया। इस सम्मान का अवसर उनके जीवन का एक खुशी का पल था तथा सभी सम्मानित होने वाली महिलाओं द्वारा अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर आयोजक टीम को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के अवसर पर सर्वप्रथम संजीवनी की महिला टीम द्वारा उनके केसों में गजरा लगाया गया तथा प्रमुख अतिथियों के हस्ते शाल, श्रीफल, मोमेंटो, फ्लावर व पानी की गुंडी देकर उन्हें सम्मान दिया गया। साथ ही इस अवसर पर संजीवनी क्लब की सभी महिला सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रुप में डिस्ट्रिक्ट गवर्नर राजेंद्रसिंग बग्गा, पूर्व प्रांतपाल विनोद जैन, समाजसेविका मंजू कटरे, अध्यक्ष सुधा जैन, राजेश्वर व राजेश कनोजिया उपस्थित थे।

नेशनल आदिवासी महिला फेडरेशन

बुलंद गोंदिया - नेशनल आदिवासी महिला फेडरेशन संगठन गोंदिया द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले का वंदन कर आदिवासी महिला बीसी ग्रुप द्वारा शास्त्री वार्ड में वर्षा कल्लो के निवास स्थान पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्थान पर तिरुमाय प्रमिला सिंधरामे, उद्घाटन तिरुमाय छाया दुर्गे तथा सचिव संगीता पूसाम, सलाहकार तिरुमाय सुषमा तोडसाम उपस्थित थी। कार्यक्रम में मार्गदर्शन तिरुमाय अनीता टेकाम, ममता नागभीरे, दुर्गा भलावी, लक्ष्मी वरखडे, वर्षा कल्लो, ललिता दुर्गे ने किया। इस अवसर पर आदिवासी समाज की बहने बड़ी संख्या में उपस्थित थी। कार्यक्रम के अवसर पर आदिवासी संस्कृति का गोंडी रेलाडांस भी आयोजित किया गया। आभार डिलश्वरी मर्सकोले ने व्यक्त किया।

गोंदिया में प्रारंभ हुई विमान सेवा रेलवे का पैदल पुल कब होगा शुरु

सांसद व विधायकों पर रेलवे के अधिकारी भारी

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिले के बिरसी विमानतल पर 13 मार्च को यात्री विमान सेवा तो शुरु हो चुकी है, किंतु गत 2 वर्षों से रेलवे प्रशासन द्वारा कुडवा लाइन से राजलक्ष्मी चौक की ओर उतरनेवाला रेलवे के पैदल पुल को कोरोना व सुरक्षा के नाम पर बंद कर रखा है। जिससे नागरिकों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। यह पुल कब शुरु होगा? इस पर प्रश्नचिन्ह निर्माण हो रहा है। इस संदर्भ में नागरिकों द्वारा सांसदों व विधायकों से अनेकों बार निवेदन किया गया, जिस पर जनप्रतिनिधियों द्वारा रेलवे अधिकारियों को पुल शुरु करने के निर्देश भी दिए गए। किंतु जनप्रतिनिधियों के दिशा-निर्देशों की अवहेलना रेलवे प्रशासन के अधिकारियों द्वारा की जा रही है। जिससे जनप्रतिनिधियों पर रेलवे के अधिकारी भारी होते दिखाई दे रहे हैं।

गौरतलब है कि जब से गोंदिया रेलवे स्टेशन का निर्माण हुआ है जो शहर के मध्य से होते हुए गुजरता है, शहर के दोनों हिस्सों को जोड़ने व नागरिकों की आवागमन की सुविधा के लिए कुड़वा लाइन से राजलक्ष्मी चौक की और उतरनेवाला रेलवे पर पैदल पुल बनाया गया है, जो हमेशा शुरु रहता था। लेकिन गत 2 वर्षों से कोरोना की महामारी व सुरक्षा का हवाला देते हुए रेलवे प्रशासन द्वारा उपरोक्त पुल को बंद कर दिया गया है। जिससे शहर के बाजार विभाग व रामनगर परिसर के नागरिकों को पैदल आवागमन में काफी परेशानियां हो रही है। इस संदर्भ में विभिन्न रेल समितियों व नागरिकों द्वारा अनेकों बार गोंदिया भंडारा जिले के सांसद सुनील मेंढे व गोंदिया के विधायक विनोद अग्रवाल को निवेदन देकर पैदल पुल शुरु करने करवाने की मांग की गई। जिसके पश्चात जनप्रतिनिधियों द्वारा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर विभाग के डीआरएम मनिंदर उप्पल को पत्र भी भेजकर निर्देश दिया गया है। किंतु रेलवे प्रशासन द्वारा जनप्रतिनिधियों के पत्रों की व दिशा-निर्देशों की उपेक्षा कर नागरिकों की सुविधाओं को नजरअंदाज करते हुए अब तक उपरोक्त पुल को शुरु नहीं किया है।

उल्लेखनीय है कि गत दिनों जिला कोरोना से मुक्त भी हो चुका है किंतु इसकी जानकारी शायद रेलवे प्रशासन को नहीं है। जिसके चलते पैदल पुल को शुरु नहीं किया जा रहा है। इस कारण रेलवे की कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिन्ह निर्माण हो रहा है।

रेल समितियों के निवेदन पर भी कार्यवाही नहीं

रेलवे प्रशासन द्वारा रेलवे स्टेशन व परिसर तथा यात्रियों की सुविधा के लिए रेल समितियों का निर्माण किया गया है। जिसमें विभिन्न क्षेत्र के प्रतिनिधि मौजूद है जिनके द्वारा भी अनेकों बार निवेदन दिया गया है। किंतु रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा इस ओर नजरअंदाज किया जा रहा है। जिससे रेलवे समितियों की सुझाव को प्रशासन रेलवे प्रशासन द्वारा न माने जाने पर समिति की भी कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिन्ह बन रहा है।

सुरक्षा कारणों का हवाला

गत अनेक वर्षों से उपरोक्त पैदल पुल शुरु होने से किसी भी प्रकार की रेलवे प्रशासन की सुरक्षा खतरे में नहीं आयी, किंतु दो-तीन वर्षों से रेलवे की सुरक्षा पर खतरा मंडराने लगा है। उपरोक्त पुल को रेलवे की सुरक्षा का कारण बताते हुए बंद किया गया है। जबकि नागरिकों द्वारा मांग की गई है कि शहर के दोनों हिस्सों को जोड़ने के लिए आवागमन हेतु पुल को शुरु किया जाए तथा प्लेटफार्म की ओर उतरने वाली सीढ़ियों को बंद रखा जाए, जिससे रेलवे की सुरक्षा तो होंगी ही तथा नागरिकों की सुविधा भी बनी रहेगी। किंतु इस ओर भी इस मांग पर भी रेलवे प्रशासन के कानों पर जूं नहीं रेंग रही है।

वरिष्ठ अधिकारियों को दी जानकारी

जनप्रतिनिधियों व रेलवे समितियों के द्वारा समय-समय पर निवेदन दिया गया है कि उपरोक्त पैदल पुल को शुरु किया जाए इस संदर्भ में वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित किया गया है तथा दिशा निर्देश प्राप्त होने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

- एच.एल. कुशवाह,
स्टेशन प्रबंधक गोंदिया

अदानी पावर की राख से फैल रहा प्रदूषण

पर्यावरण मंत्री आदित्य ठाकरे को तहसील शिवसेना प्रमुख ने निवेदन देकर की कार्रवाई की मांग

बुलंद संवाददाता तिरोड़ा - गोंदिया जिले की तहत तिरोड़ा तहसील के अंतर्गत स्थित अदानी पावर प्लांट से प्रतिदिन निकलनेवाली राख से पर्यावरण को भारी नुकसान हो रहा है। जिस पर कार्रवाई की मांग को लेकर भंडारा जिले के मोहाडी तहसील के शिवसेना प्रमुख अनिल सार्वे द्वारा राज्य के पर्यावरण मंत्री आदित्य ठाकरे को मुंबई में निवेदन देकर कार्यवाही की मांग की है।

गौरतलब है कि गोंदिया जिले के तिरोड़ा तहसील में अदानी पावर प्लांट स्थित है। जिसमें कोयले से बिजली का निर्माण किया जाता है। कोयले की निकलने वाली राख का प्रतिदिन बड़े पैमाने पर गोंदिया जिले के साथ-साथ भंडारा जिले के मोहाडी तहसील के अंतर्गत आनेवाले धीवरटोला, मांडवी, पालोदा, देव्हाड़ा इन ग्रामों में टीप्पर द्वारा ले जाई जाती है। जब पावर प्लांट से टिप्पर राख भरकर निकलते

हैं तो राख पूरे मार्ग पर फैलने लगती है। जिससे मार्गों पर आवागमन करनेवाले नागरिकों व वाहन चालकों की आंख में राख जाती है। जिससे नागरिकों में आंख की गंभीर बीमारियां फैल रही है। इसके साथ ही पर्यावरण को भी भारी नुकसान हो रहा है। जिन स्थानों पर इस राख को डाला जाता है वहां पर किसी भी प्रकार की वनस्पति फिर कभी नहीं उगती है। जिससे पर्यावरण व जल प्रदूषण व वायु प्रदूषण बड़े पैमाने पर क्षेत्र में फैलने लगा है। इस संदर्भ में प्रदूषण विभाग भंडारा को 21 फरवरी 2022 को कार्रवाई के लिए पत्र दिया गया था, लेकिन अदानी पावर प्लांट पर प्रदूषण विभाग का किसी भी प्रकार का नियंत्रण न होने तथा प्रदूषण विभाग की कार्रवाई पर हमेशा ही प्रश्नचिन्ह निर्माण लगा होने के चलते किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं हो पायी है

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त राख की निकासी प्रतिदिन 24 घंटे होती है। जिससे मार्गों पर भी भारी पैमाने पर राख जमा हो रही है। पर्यावरण संरक्षण के लिए तथा नागरिकों के स्वास्थ्य को देखते हुए अदानी पावर प्लांट की इस लापरवाही पूर्ण कार्यप्रणाली पर कार्रवाई करने के लिए भंडारा जिले के मोहाडी तहसील के शिवसेना प्रमुख अनिल सार्वे द्वारा मुंबई में पर्यावरण मंत्री महाराष्ट्र शासन आदित्य ठाकरे को पत्र देकर कार्यवाही की मांग की गयी है।

शालेय पोषण आहार के नाम पर मवेशियों के चारे से भी घटिया अनाज का विद्यार्थियों को वितरण

चंगेरा जिला परिषद स्कूल का मामला । गुटखा पन्नी व भूसा मिश्रित मिला अनाज

बुलंद गोंदिया - मिड-डे मिल योजना के तहत विद्यार्थियों को पोषण आहार के नाम पर मवेशियों के चारे से भी घटिया दर्जे का अनाज का वितरण किया जा रहा है। इस तरह का मामला 15 मार्च को गोंदिया जिला परिषद की चंगेरा जिप स्कूल में सामने आने से शिक्षा विभाग की पोल खुल गई है। वहीं विद्यार्थियों के अभिभावक व जनप्रतिनिधियों में वितरण प्रणाली के खिलाफ तीव्र असंतोष निर्माण हो गया है। अनाज से भरी बोरियों में गुटखा पाऊच की पन्नियां व भूसा पाया गया है। जिसका पंचनामा स्कूल पोषण आहार विभाग की ओर से किया गया है।

गौरतलब है कि कक्षा पहली से आठवी तक के विद्यार्थियों को पोषण आहार दिया जाता है। कोरोना संक्रमण के कारण विद्यार्थियों को भोजन के बजाए चावल, मूंगदाल व चने का वितरण किया जा रहा है। अगस्त 2021 से फरवरी 2022 तक का शालेय पोषण आहार जिले की सभी लाभार्थी स्कूलों को वितरित किया गया है। लेकिन वितरित किया गया अनाज इतना घटिया दर्जे का है कि चना और मूंगदाल में भूसा भरा हुआ है। जिसे अनाज के रुप में उपयोग नहीं किया जा सकता। फिर भी इस तरह का अनाज विद्यार्थियों को पोषण आहार के नाम पर वितरित किया जा रहा है। गोंदिया पंचायत समिति अंतर्गत चंगेरा जिला परिषद स्कूल में 154 दिन का पोषण आहार के तहत चावल, मूंगदाल व चने का वितरण किया गया। 15 मार्च को जब अनाज की जांच की गई तो चने की बोरियों में भूसा तथा गुटखा पाऊच की पन्नियां पायी गई। इस घटना की जानकारी मिलते ही अभिभावक, ग्राम

पंचायत के पदाधिकारी व क्षेत्र के जिला परिषद व पंचायत समिति सदस्य स्कूल में पहुंच गए। जब उन्होंने अनाज देखा तो अनाज में उपरोक्त मिलावट पायी गई। घटना की जानकारी स्कूल पोषण आहार व शिक्षा विभाग को दी गई। जानकारी मिलते ही पोषण आहार अधीक्षक देवेंद्र रहांगडाले तथा अन्य कर्मचारी जांच करने पहुंच गए। समाचार लिखे जाने तक जांच प्रक्रिया शुरु थी।

नाडेप कम्पोस्ट टंकी निर्माण में भारी अनियमितता

घटिया दर्जे के निर्माण से शासन को करोड़ों रुपए की चपत

देवरी - कूड़े का सही प्रबंधन हो तथा रासायनिक खाद पर निर्भरता कम करने के साथ ही किसान की आय भी बढ़े इसके लिए सरकार द्वारा मनरेगा के अंतर्गत गांव-गांव नाडेप कम्पोस्ट टंकी बनाने का कार्य शुरु हैं। लेकिन जिले के आदिवासी बहुल देवरी तहसील में मनरेगा के अंतर्गत बन रहे नाडेप कम्पोस्ट टंकी न सिर्फ़ घटिया दर्जे की है बल्कि इसके निर्माण में नियमों तक को ताक पर रख दिया गया है।

विदित हो गत वर्ष देवरी तहसील के फुक्कीमेटा, देवाटोला, वडेगांव, मुल्ला तथा ओवारा ग्राम पंचायत में मनरेगा के अंतर्गत हजार से अधिक नाडेप कम्पोस्ट खाद टंकीयों का निर्माण किया गया है और अभी परसोडी, नकटी, केशोरी, कन्हाळगांव, पलानगांव, शेरपार आदि गांवों में हजारों नाडेप कम्पोस्ट खाद टंकीयों का निर्माण शुरु हैं। लेकिन निर्माण की गुणवत्ता निम्नस्तर की और तय मानकों के अनुरुप नहीं होने की वजह से उक्त परियोजना में प्रथमदृष्टा भारी भ्रष्टाचार का मामला नज़र आ रहा है।

इस संबंध में जांच पड़ताल करने के बाद जो जानकारी प्राप्त हुई है उससे पता चलता है कि करोड़ों रुपए के इस घोटाले में संबंधित ग्रामों के ग्राम सेवकों, सरपंचों सहित मनरेगा के अधिकारियों की भूमिका संदिग्ध है। संघठीत रुप से इस घोटाले द्वारा सरकार को करोड़ों रुपए कि चपत दी गई है।

ऊपर तक जुड़े है तार..

तहसील के दुर्गम और आदिवासी बहुल नकटी, परसोडी, पिपरखारी जैसे अनेक ग्राम पंचायतों में टंकी निर्माण के नाम पर महज़ खानापूर्ति की जा रही है। निर्माण में भ्रष्टाचार और भारी अनियमितता की शिकायतों के बावजूद संबंधित विभाग के अधिकारियों द्वारा अनदेखी व अभी तक इस पर किसी प्रकार की जांच-पड़ताल अथवा कार्यवाही नहीं करने की वज़ह से प्रशासन की भूमिका पर सवाल खड़े हो रहें हैं।

यहां उल्लेखनीय है कि इसी योजना के अंतर्गत पहले 5 ग्राम पंचायतों में बने नाडेप कम्पोस्ट खाद टंकी निर्माण में भारी गड़बड़ी और निम्न स्तर की गुणवत्ता की शिकायतों के बावजूद बगैर किसी जांच पड़ताल अथवा कार्यवाही के निर्माण सामग्री, मज़दूरी का भुगतान कर दिया गया। बाकी के ग्रामपंचायतो में नियमों तथा मानकों को नजरंदाज कर धड़ल्ले से घटिया दर्जे के टंकियों का निर्माण शुरु हैं। जिसके चलते इस घोटाले के तार ऊपर तक पहुंचने का अंदाजा है।

संपूर्ण तहसील में चर्चा का विषय बने इस प्रकरण की गंभीरता से जांच कर दोषियों को सजा देने की मांग क्षेत्र के नागरिकों द्वारा कि जा रही है।

क्या है नाडेप कम्पोस्ट खाद..?

नाडेप कंपोस्ट गोबर से बना जैविक खाद हैं। इसे बनाने की यह विधि ग्राम पुसद, जिला यवतमाल, महाराष्ट्र के नारायण देवराव पंढ़री पांडे द्वारा विकसित की गई है। नाडेप कंपोस्ट बनाने की प्रक्रिया में जमीन में एक टंकी बनाई जाती है। जिसमें गोबर, जैविक कचरा और मिट्टी की प्रक्रिया द्वारा जैविक खाद का निर्माण किया जाता है। इस विधि में कम से कम गोबर का उपयोग करके अधिक मात्रा में अच्छी खाद तैयार की जा सकती है। देश के कई राज्यों की सरकार द्वारा किसानों को महंगी और प्राकृति के लिए नुकसानदायक रासायनिक खाद की बजाय जैविक खाद के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मनरेगा के अंतर्गत नाडेप कम्पोस्ट खाद टंकीयां बनवायी जा रही है।

भालू का गोली मारकर शिकार

प्रमुख अंग गायब । आरोपियों की तलाश में जुटा वन विभाग

बुलंद गोंदिया - नवेगांव वन परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सहवन क्षेत्र बाराभाटी बिट चान्ना मौजा इंजोरी निवासी हेमराज धनीराम शेंडे के खेत परिसर में 13 मार्च की सुबह एक जंगली भालू की गोली मारकर शिकार किए जाने का मामला सामने आया है। जिसमें भालू के सभी अंग गायब है तथा आरोपियों की तलाश में वन विभाग जुड़ गया।

गौरतलब है कि गोंदिया जिले के संरक्षित वन क्षेत्रों में दिनोंदिन वन्यजीवों की संख्या में बढ़ोतरी होने के साथ ही शिकार के मामले भी सामने आ रहे हैं। इसी प्रकार का एक मामला 13 मार्च की सुबह सामने आया जब नवेगांव बांध के अंतर्गत आने वाले सहवन क्षेत्र बाराभाटी बीट चांन्ना मौजा इंजोरी निवासी हेमराज धनीराम शेंडे सुबह 9 बजे के दौरान अपने खेत परिसर में पहुंचा, तो वहां पर एक वन्यजीव भालू मृत अवस्था में दिखाई दिया। जिसके प्रमुख अंग तथा पंजे घटनास्थल से नदारद थे। इस घटना की जानकारी किसान द्वारा वन विभाग को दिए जाने के पश्चात वन विभाग का दल घटनास्थल पर पहुंचकर सड़क अर्जुनी के पशु विकास अधिकारी डॉ. एस.बी. वाधाये, पशुधन विकास अधिकारी डॉ. शीतल वानखेडे को घटनास्थल पर बुलाकर मृत भालू के शव का विच्छेदन किया गया। जिसमें भालू को गोली मारकर शिकार किए जाने के साथ ही उसके सभी प्रमुख अंग शिकारियों द्वारा काटकर ले जाए गए। इस मामले में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 9, 44, 48 के तहत मामला दर्ज कर उपरोक्त मामले में वरिष्ठ अधिकारी डी. वी. राऊत तथा सहायक वन संरक्षक नवेगांव बांध के मार्गदर्शन में वन परीक्षेत्र अधिकारी नवेगांव बांध आर. आय. दोनोंडे के द्वारा की जा रही है। उपरोक्त मामले में संभावना जताई जा रही है कि भालू का शिकार कर उसके मांस की बिक्री किया गया है।

प्रशिक्षु डॉक्टर ने महिला मरीज के साथ किया दुष्कर्म

चिकित्सा के पवित्र पेशे को किया कलंकित

बुलंद गोंदिया - गोंदिया तहसील के रावणवाडी पुलिस थाना अंतर्गत आनेवाले ग्रामीण चिकित्सालय रजेगांव में शासकीय मेडिकल कॉलेज गोंदिया के प्रशिक्षु चिकित्सक ने डॉक्टरी पेशे को कलंकित करते हुए 22 वर्षीय महिला मरीज के साथ दुष्कर्म किया। उपरोक्त घटना 15 मार्च की सुबह घटित हुई। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार गोंदिया के शासकीय मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर की पढ़ाई कर प्रशिक्षु चिकित्सक के रुप में रजेगांव के ग्रामीण चिकित्सालय में कार्यरत चिकित्सक राजस्थान सांचुर रमेश कॉलोनी निवासी वर्तमान में गोंदिया निवासी डॉ. हडमक डोगराम माली (26) ने रजेगांव के ग्रामीण चिकित्सालय में उपचार के लिए आनेवाली 22 वर्षीय महिला मरिज के साथ दुष्कर्म किया। उपरोक्त घटना 15 मार्च की सुबह 6.30 बजे के दौरान सामने आयी।

उल्लेखनीय है कि गोंदिया के शासकीय मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की पढ़ाई कर प्रशिक्षु चिकित्सक

के रुप में रजेगांव ग्रामीण चिकित्सालय में 5 से 6 चिकित्सक कार्य कर रहे हैं। उनमें से एक आरोपी चिकित्सक द्वारा चिकित्सा पेशे को कलंकित करनेवाली घटना को अंजाम देते हुए महिला मरीज के साथ ही दुष्कर्म किया। इस घटना के पश्चात पीड़ित महिला द्वारा रावणवाड़ी पुलिस थाने में आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस ने भादवि की धारा 376 के तहत मामला दर्ज कर आरोपी को हिरासत में लिया है। उपरोक्त मामले की जांच रावणवाड़ी पुलिस थाने के पुलिस निरीक्षक उद्धव डमाले द्वारा की जा रही है।

नशे का बाजार

नशीले पदार्थों के उत्पादन और उपभोग पर रोक लगाने के लिए दुनिया के हर देश में कड़े कानून हैं। नशीले पदार्थों की खरीद-बिक्री पर नजर रखने के लिए मादक पदार्थ नियंत्रण ब्यूरो हैं। मगर हकीकत यह है कि ऐसे पदार्थों पर रोक लगाना तो दूर, दिनों-दिन इनकी खपत और कारोबार बढ़ते जा रहे हैं। चिंता की बात है कि अब नशीले पदार्थों की खरीद-बिक्री के लिए इंटरनेट का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है। विएना स्थित अंतरराष्ट्रीय स्वापक नियंत्रण ब्यूरो यानी आइएनसीबी ने अपनी पिछले साल की वार्षिक रिपोर्ट में बताया है कि भारत और दक्षिण एशिया में गैरकानूनी वस्तुओं की बिक्री करने वाली इंटरनेट संचालित दुकानों यानी डार्कनेट के जरिए भारी पैमाने पर नशीले पदार्थों की तस्करी हो रही है।

इसमें सोशल मीडिया का भी उपयोग किया जा रहा है। ये दुकानें ऐसे पदार्थों का महिमामंडन करने के लिए सामग्री भी प्रसारित करती हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि दवा की शक्ल में भी इन पदार्थों की बिक्री की जाती है। आइएनसीबी ने ऐसी कुछ दुकानों को चित्रित कर उनकी सूची भी जारी की है। यह एक डरावना तथ्य है। मगर हैरानी की बात है कि ऐसी दुकानों पर प्रतिबंध लगाने के लिए अभी तक कोई व्यावहारिक कदम क्यों नहीं उठाया जा सका है।

हमारे देश में नशीले पदार्थों ने इस कदर अपनी पैठ बना ली है कि बहुत सारे युवा इनकी लत का शिकार होकर अपनी सेहत चौपट कर रहे या असमय काल के गाल में समा रहे हैं। पंजाब में नशीले पदार्थों के दुष्प्रभाव की भयावह तस्वीरें किसी से छिपी नहीं हैं। अब अमीर और संभ्रांत वर्ग के जलसों में ऐसे नशीले पदार्थों का सेवन फैशन-सा बनता जा रहा है। बल्कि कई जगह तो विशेष रुप से ऐसे पदार्थों के सेवन के लिए ही चोरी-छिपे दावतें दी जाती हैं। नारकोटिक्स ब्यूरो कहीं-कहीं कुछ लोगों की धर-पकड़ कर कभी-कभार नशे के कारोबार पर अपनी सख्ती जाहिर करता है, पर हकीकत यही है कि इस कारोबार के मुख्य स्रोत तक उसकी पहुंच नहीं बन पाती। इसी का नतीजा है कि नशे के कारोबारी अब इस कदर बेखौफ नजर आते हैं कि दूसरे देशों से सैकड़ों किलो की मात्रा में नशीले पदार्थों की खेप मंगा लेते हैं। गुजरात के एक बंदरहगाह और दूसरी कई जगहों पर भारी मात्रा में पकड़े गए नशीले पदार्थ इसके प्रमाण हैं। पुलिस और नारकोटिक्स विभाग पर शक की सुई इसलिए बार-बार जाकर अटक जाती रही है कि कई मामलों में खुद इन्हीं महकमों के लोग शामिल पाए गए हैं। कुछ साल पहले पंजाब के एक डीएसपी श्रेणी के अधिकारी को नशीले पदार्थों को दवा की टिकिया के रुप में बेचने का दोषी पाया गया था।

नशे का कारोबार इसलिए चिंता का विषय है कि यह न सिर्फ युवाओं का जीवन बर्बाद कर रहा है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर डाल रहा है। मगर सरकारें अभी तक इस कारोबार पर नकेल कसने में विफल ही साबित हुई हैं। इसके लिए दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरुरत है। मगर पंजाब में जिस तरह एक राजनेता को इस कारोबार में संलिप्त पाए जाने पर गिरयतार किया गया, उससे यह संकेत मिलता है कि इस कारोबार की जड़ें राजनीति से भी खाद-पानी ले रही हैं। यह समझ से परे है कि जब आपत्तिजनक सामग्री परोसने वाली साइटें बंद की जा सकती हैं, तो नशे का कारोबार करने वाली वेबसाइटों को बंद करनें में भला क्या अड़चन हो सकती है।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल द्वारा बुलंद गोंदिया साप्ताहिक समाचार पत्र भवानी प्रिंटींग प्रेस, गुरुनानक वार्ड, गोंदिया, ता.जि.गोंदिया से मुद्रित व बुलंद गोंदिया भवन, जगन्नाथ मंदिर के पास गौशाला वार्ड, गोंदिया ४४१६०१, ता.जि.गोंदिया से प्रकाशित । संपादक : संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल, मो.क्र. ९४०५२४४६६८ । (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार) प्रकाशित किये गये समाचार व लेख से संपादक सहमत है ऐसा नहीं है । न्यायालय क्षेत्र गोंदिया ।